RAMAYAN
RESEARCH COUNCIL

‘रामायण रिसर्च काउंसिल’

के तत्त्वावधान में ‘कुंभ’ पर हमारे विशेष-कार्य का संकल्प

ज्ञान-कुंभ

शोध, साहित्य एवं संस्कृति का महासमागम

ताकि धर्म, धरा एवं शोध के संगम 'कुंभ' के '
ऐतिहासिक आयोजन के स्वर्णिम साक्ष्य' हेतु हम
अनंतकाल तक साक्षी बन सकें।

» कुंभ का संबंध समुद्र मंथन से होता है, अतः इसके आयोजन में केवल एक स्नान नहीं, ज्ञान का भी संगम होता है।

» हर कुंभ में हम एक नया अध्याय जोड़ते हैं, उन पर शोध कर संस्कृति की धारा मोड़ते हैं।

» काउंसिल के तत्वावधान में कुंभ के हर आयोजन के अंत में तैयार ये साहित्य वृहद, ज्ञानवर्धक, शोधपरक और आकर्षक होता है, अर्थात भविष्य की दृष्टि से एक संदर्भ-संकलन बनाने का प्रयत्न करते हैं।

'रामायण रिसर्च कांउसिल' के तत्त्वावधान में कुंभ में हम इन आयोजनों को क्रियान्वित करने में अपनी सहभागिता रखते हैं।

- **महाआरती:** प्रमुख घाटों पर सुबह और शाम को गंगा/संगम आरती का भव्य आयोजन (दीप-दान के साथ)।

- **यज्ञ और अनुष्ठान:** विश्व शांति या राष्ट्र कल्याण के लिए बड़े स्तर पर हवन और यज्ञ का आयोजन।

- **धर्म संसद:** संतों और विद्वानों के बीच धर्म, संस्कृति और वर्तमान चुनौतियों पर चर्चा।

- **पुस्तक विमोचन:** धार्मिक, सांस्कृतिक और सरकार के सकारात्मक कार्यों से संबंधित विषयों पर नई पुस्तकों और पत्रिकाओं का विमोचन।

- **सनातन प्रदर्शनी:** भारतीय संस्कृति, इतिहास और विज्ञान को दर्शाने वाली चित्र या डिजिटल प्रदर्शनी का आयोजन।

- **भजन संध्या और कीर्तन:** प्रसिद्ध गायकों या स्थानीय मंडलियों द्वारा गायन।

- **रामलीला और रासलीला:** प्रभु श्रीराम और श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित मंचन।

- **शास्त्रीय संगीत और नृत्य:** भारतीय शास्त्रीय कलाओं का प्रदर्शन।

- **कवि सम्मेलन:** राष्ट्रभक्ति और भक्ति रस पर आधारित काव्य पाठ।

- **विशाल भंडारा:** श्रद्धालुओं के लिए निःशुल्क भोजन प्रसाद की व्यवस्था।

- **चिकित्सा शिविर:** स्वास्थ्य जांच और निःशुल्क दवा वितरण।

- **योग और ध्यान शिविर:** सुबह के समय सामूहिक योग-सत्र।

- **युवा संवाद:** युवाओं को धर्म और अध्यात्म से जोड़ने के लिए विशेष सत्र।

- **विराट सत्संग और कथा-प्रवचन:** बाल-व्यास वैदेहीनंदन वेदांत जी (12 वर्षीय) महाराज नियमित श्रीसीताराम कथा, श्रीहनुमंत कथा एवं श्रीजानकी कथा का आयोजन करते हैं।

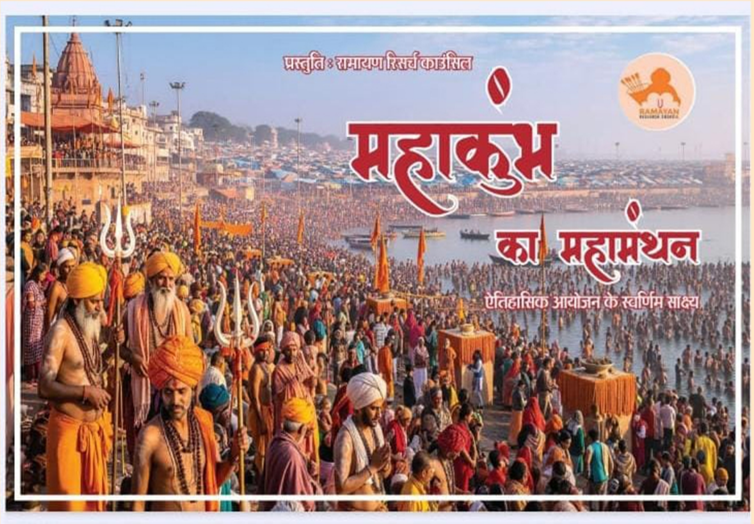

- **शाही स्नान और शोभा यात्रा पर विशेष साहित्य:** अखाड़ों के संतों और महामंडलेश्वरों की भव्य पेशवाई और स्नान पर विशेष साहित्य हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में तैयार करवाते हैं और उन साहित्य को विश्वस्तरीय बड़े पुस्तकालयों में रखवाने का प्रयत्न करते हैं जो चिरकाल तक एक संदर्भ का कार्य करे।

- **शास्त्रार्थ:** वेदों और पुराणों पर गुरुकुल के छात्रों या विद्वानों के बीच पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता।
- **स्वच्छता अभियान:** पर्यावरण संरक्षण और नदी की स्वच्छता के लिए जागरूकता कार्यक्रम एवं संगोष्ठी।

वर्ष 2025 में तीर्थराज प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ के बाद 'रामायण रिसर्च काउंसिल' के विशेष-कार्य को जानिए

महाकुंभ पर हिंदी तथा अंग्रेज़ी भाषा में सबसे आकर्षक, व्यापक एवं शोधपूर्ण साहित्य : महाकुंभ का महामंथन

महाकुंभ पर ये साहित्य क्यों ?

144 वर्ष बाद आयोजित महाकुंभ दिव्य, अनुमप व ऐतिहासिक रहा। इस महाकुंभ में पिछले सारे मापदंड टूट गए। ऐसा प्रतीत हुआ मानो ईश्वर स्वयं अपने सानिध्य में इस अद्वितीय आयोजन को क्रियान्वित करा रहे हों। इस महाकुंभ से हमारे सनातन का जयघोष विश्व-भर में बढ़ा है। एक ओर कई रिकॉर्ड्स भी बने, वहीं यह विश्व के लिए एक शोध का विषय बन गया।

काउंसिल को भी महाकुंभ में मिला था स्थान

काउंसिल को भी सेक्टर-23 में इस महाकुंभ के दौरान स्थान आवंटित था। काउंसिल ने प्रयागराज मेला प्राधिकरण और उत्तर प्रदेश सरकार को आश्वस्त किया था कि काउंसिल का उद्देश्य देश की सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रखने हेतु साहित्य-सृजन का मुख्य रूप से होता है।

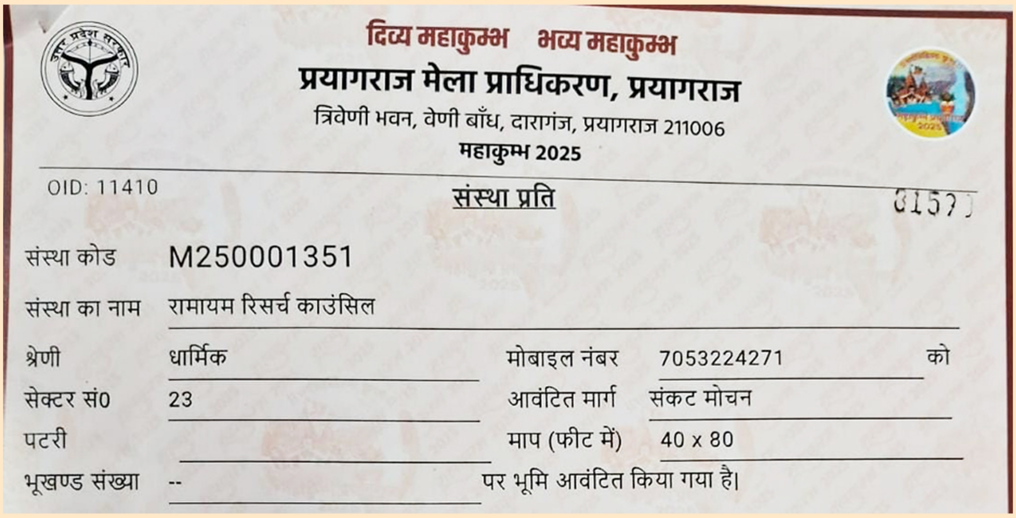
दिव्य महाकुम्भ भव्य महाकुम्भ
प्रयागराज मेला प्राधिकरण, प्रयागराज
त्रिवेणी भवन, वेणी बाँध, दारागंज, प्रयागराज 211006
महाकुम्भ 2025
OID: 11410
संस्था प्रति
संस्था कोड M250001351
संस्था का नाम रामायम रिसर्च काउंसिल
श्रेणी धार्मिक मोबाइल नंबर 7053224271 को
सेक्टर सं0 23 आवंटित मार्ग संकट मोचन
पटरी माप (फीट में) 40 x 80
भूखण्ड संख्या -- पर भूमि आवंटित किया गया है।

बाल व्यास वैदेहीनंदन वेदांत जी (12 वर्षीय) बने इस साहित्य के विचार के सूत्रधार

काउंसिल के शुभांकर 12 वर्षीय बाल व्यास वैदेहीनंदन वेदांत जी महाराज ने "महाकुंभ का महामंथन" की पूरी रूपरेखा तैयार की। इस विचार को देने वाले सूत्रधार बने। वैदेहीनंदन का विचार था कि कुंभ का संबंध समुद्र-मंथन से है, ऐसे में महाकुंभ के दौरान पूज्य संतों के श्रीमुख से निकले हर एक शब्द को हम देवताओं के शब्द मानेंगे। ये वो शब्द होंगे जिनसे राष्ट्र और विश्व को दिशा मिल सकती है, इसलिए रामायण रिसर्च काउंसिल पूज्य संतों के हर एक शब्द के साथ महाकुंभ के दौरान हुई प्रमुख गतिविधियों को भविष्य के लिए एक दस्तावेज बनाकर संग्रहित करने का कार्य किया। वैदेहीनंदन वेदांतजी का विचार था कि महाकुंभ को सदैव मानस पटल पर जीवंत रखने जैसे विषय को ध्यान में रखकर चित्रसहित एक विशेष साहित्य तैयार हो।

वैदेहीनंदन वेदांत जी ने इसे 'महाकुंभ का महामंथन' नाम दिया, क्योंकि जैसी पहले चर्चा हुई, महाकुंभ का संबंध भी समुद्र मंथन से है और जैसे समुद्र मंथन से हलाहल विष, कामधेनु गाय, ऐरावत हाथी, कौस्तुभ मणि, कल्पवृक्ष, रंभा अप्सरा, माता लक्ष्मी, वारुणी मदिरा, चंद्रमा, पांचजन्य शंख, पारिजात वृक्ष, शारंग धनुष, धन्वन्तरि और अमृत निकला, उसी तरह इस महाकुंभ में भी कई ऐसे विचार निकले जो संतवाणी थी, नागाओं और साधुओं के पवित्र अमूल्य संदेश थे। राष्ट्रहित और विश्वहित को लेकर कई अमृत चर्चा थी। इसलिए हम इसे 'महामंथन' शब्द दिया।

उनका चिंतन था कि जैसे हम अपने बड़ों के हर एक कहे शब्दों को स्मृति में जीवंत रखते हैं, समय-समय पर उसका उदाहरण देते हैं और अपनी आने वाली पीढ़ी को उसका अनुभव साझा करते हैं, उसी तरह 144 वर्षों बाद के महासंयोग पर आयोजित महाकुंभ के दौरान निकले हर एक संतवाणी को हम 'महामंथन' समझकर ग्राह्य करना चाहेंगे, ताकि वह हमारे सनातन, हिन्दुत्व, हिन्दुस्तान ही नहीं, विश्व के काम आवे।

"रामायण रिसर्च काउंसिल" की पहल

काउंसिल ने एक बाल-मन के विचार को ईश्वरीय संदेश मानते हुए इसपर अपना विशेष यह पहल किया। पूरे महाकुंभ के आयोजन को काउंसिल ने 30 से अधिक सदस्यों की एक टीम के साथ कवर करवाया। यथासंभव हर उस अति विशिष्ट आयोजन और चित्र को संजोने का प्रयास किया जो इस ऐतिहासिक आयोजन को सदैव प्राण भरने जैसा कार्य करे। अंततः काउंसिल ने सारी सामग्रियों को संजोते हुए एक शोधपरक, ज्ञानवर्धक, वृहद एवं आकर्षक 'कॉफीटेबल-बुक' (शीर्षक- महाकुंभ का महामंथन) को प्रकाशित किया।

उपरोक्त साहित्य- 'महाकुंभ का महामंथन' में काउंसिल ने भविष्य की दृष्टि से महाकुंभ, अखाड़ा व इस दौरान स्नान से संबंधित कई आध्यात्मिक जानकारियों को इस साहित्य में सम्मिलित किया जिसके माध्यम से सदियों बाद भी महाकुंभ का विषय सुरक्षित रह सके।

काउंसिल की योजना

महाकुंभ का महामंथन में महाकुंभ की तैयारी, आयोजन व क्रियान्वयन को क्रमबद्ध तरीके से कवर किया गया है। वहीं, काउंसिल ने इन सभी सामग्रियों को डिजिटल रूप से प्रसार करने के लिए www.makakumbhinfo.com को भी तैयार किया है। हमने 'महाकुंभ का महामंथन' को अंग्रेजी भाषा में भी तैयार किया है ताकि हम सनातन परंपरा के इस ऐतिहासिक विषय (साहित्य- 'महाकुंभ का महामंथन') को दुनिया के कई देशों में ले जा सकें, वो इसलिए ताकि जो सनातन परिवार किन्हीं कारणों से ऐसे दैवीय एवं पवित्र आयोजन में शामिल नहीं हो पाते हैं, वो इसका अध्ययन कर सकें और अपनी आने वाली पीढ़ी को इस बारे में बता सकें। इसके साथ ही, हम इसे भारत के साथ दुनिया की श्रेष्ठ लाइब्रेजीज में भी रख सकें। काउंसिल की एक बड़ी टीम इस पर कार्य कर रही है।

हम आने वाले हर कुंभ- जैसे- नासिक, हरिद्वार, उज्जैन पर भी ऐसे ही साहित्य को तैयार करते रहेंगे जिससे हमारे सनातन की महिमा चिरकाल तक संरक्षित रहे और आने वाली पीढ़ी को हम ऐसे साहित्य विरासत के रूप में सौंप सकें।

अगले कुंभ पर तैयार करेंगे साहित्य

नासिक में आयोजित होने वाला कुंभ मेला वर्ष 2027 में 17 जुलाई से शुरू होकर 17 अगस्त तक चलेगा। इस मेले को सिंहस्थ कुंभ भी कहा जाता है और यह गोदावरी नदी के तट पर आयोजित किया जाएगा। नासिक में कुंभ मेले का आयोजन 12 वर्षों में एक बार होता है, और यह भारत के चार प्रमुख कुंभ स्थलों में से एक है, अन्य तीन प्रयागराज, हरिद्वार और उज्जैन हैं। नासिक-त्र्यंबकेश्वर में में नागा साधु स्नान करेंगे और लोग पंचवटी में भी स्नान करेंगे। कुंभ मेले के दौरान, नासिक शहर में भारी भीड़ उमड़ती है और अनुमान है कि 12 से 14 करोड़ श्रद्धालु इस मेले में भाग लेंगे। इसलिए, मेले के सुचारू आयोजन के लिए सरकार द्वारा व्यापक व्यवस्थाएं की जा रही हैं। इसमें सड़कों का विस्तार, रेलवे और बस सेवाओं में सुधार, अस्थायी आवास, स्वास्थ्य सुविधाएं और सुरक्षा व्यवस्था शामिल हैं।

आप सभी काउंसिल के इस अभियान से सतत जुड़ते रहें और काउंसिल के हर कार्य को अपना आशीष प्रदान करते रहें, इन्हीं आशा एवं अपेक्षाओं के साथ, आप सभी का वंदन-अभिनंदन।

मीडिया कवरेज

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
DATE: 30.12.2025
WWW.DAINIKJAGRAN.COM
HINDI NEWS / DELHI-NCR / NEW-DELHI-CITY

बाल व्यास के विचार से जन्मा महाकुंभ का महामंथन, सनातन परंपरा का शोधपरक दस्तावेज तैयार

BY ANOOP KUMAR SINGH | EDITED BY: KUSHAGRA MISHRA
UPDATED: TUE, 30 DEC 2025 03:06 PM (IST)

रामायण रिसर्च काउंसिल ने प्रयागराज महाकुंभ-2025 पर केंद्रित शोधपरक साहित्य 'महाकुंभ का महामंथन' तैयार किया है। इसका मूल विचार 11 वर्षीय बाल व्यास वैदेहीनंदन वेदांतजी ने दिया। यह पुस्तक महाकुंभ, अखाड़ों और स्नान से जुड़ी आध्यात्मिक जानकारी संकलित करती है, जिससे भावी पीढ़ियां सनातन संस्कृति के गौरव पर शोध कर सकें। इसमें प्रधानमंत्री मोदी के विचार भी शामिल हैं, जो हिंदी और अंग्रेजी में प्रकाशित है।

HIGHLIGHTS

1. रामायण रिसर्च काउंसिल ने 'महाकुंभ का महामंथन' साहित्य तैयार किया
2. 11 वर्षीय बाल व्यास वैदेहीनंदन वेदांत ने इसका मूल विचार दिया
3. सनातन संस्कृति के गौरव पर शोध हेतु आध्यात्मिक जानकारी संकलित

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली। रामायण रिसर्च काउंसिल ने प्रयागराज महाकुंभ-2025 पर एक विस्तृत, शोधपरक साहित्य 'महाकुंभ का महामंथन' तैयार किया है। इसका मूल विचार 11 वर्षीय बाल व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांतजी ने दिया।

काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र ने बताया कि इसमें महाकुंभ, अखाड़ों तथा स्नान से जुड़ी आध्यात्मिक जानकारियां संकलित की गई हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियां सनातन संस्कृति के गौरव पर शोध कर गर्वान्वित हो सकें।

पुस्तक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा संघ के क्षेत्रीय संघचालक (उत्तर क्षेत्र) पवन जिंदल के विचार शामिल हैं। राष्ट्रीय युवा संयोजक जयराम विप्लव के अनुसार, इसमें महाकुंभ की तैयारी, आयोजन, क्रियान्वयन तथा वैश्विक संदेश को क्रमबद्ध एवं आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। काउंसिल ने सामग्री को डिजिटल रूप से प्रसारित करने की भी योजना बनाई है।

ट्रस्टी देव रत्न शर्मा ने बताया कि पुस्तक हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार की गई, ताकि सनातन परंपरा विश्व स्तर पर पहुंच सके और प्रमुख पुस्तकालयों में संरक्षित रहे। ट्रस्टी अंबर अग्रवाल ने जानकारी दी कि महाकुंभ के दौरान काउंसिल को सेक्टर-23 में स्थान आवंटित हुआ था।

काउंसिल का प्रयास है कि पुस्तक की पहली प्रति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भेंट की जाए। सचिव पितांबर मिश्र ने बताया कि अब काउंसिल का विचार नासिक, हरिद्वार एवं उज्जैन में आयोजित होने वाले कुंभ पर भी इसी प्रकार के दस्तावेज तैयार किए जाने का है।

नईदुनिया
DATE: 02.01.2026

महाकुंभ | बाल व्यास वैदेहीनंदन वेदांत के विचार पर रामायण रिसर्च काउंसिल ने तैयार किया साहित्य

सनातन गौरव पर शोधपरक साहित्य हुआ तैयार

नईदुनिया संवाददाता, नई दिल्लीः रामायण रिसर्च काउंसिल ने प्रयागराज महाकुंभ-2025 पर एक विस्तृत, शोधपरक साहित्य 'महाकुंभ का महामंथन' तैयार किया है। इसका मूल विचार 11 वर्षीय बाल व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांत ने दिया। काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र ने बताया कि इसमें महाकुंभ, अखाड़ों और स्नान से जुड़ी आध्यात्मिक जानकारियां संकलित की गई हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियां सनातन संस्कृति के गौरव पर शोध कर गर्वान्वित हो सकें।

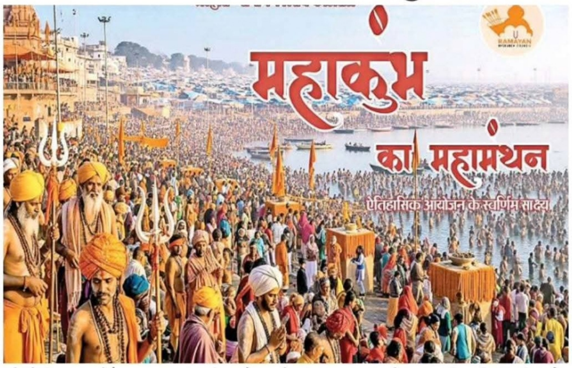

पुस्तक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और संघ के क्षेत्रीय संघचालक (उत्तर क्षेत्र) पवन जिंदल के विचार शामिल हैं। राष्ट्रीय युवा संयोजक जयराम विप्लव के अनुसार, इसमें महाकुंभ की तैयारी, आयोजन, क्रियान्वयन और वैश्विक संदेश को क्रमबद्ध एवं आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। काउंसिल ने सामग्री को डिजिटल रूप से प्रसारित करने की भी योजना बनाई है।

ट्रस्टी देव रत्न शर्मा ने बताया कि पुस्तक हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार की गई, ताकि सनातन परंपरा विश्व स्तर पर पहुंच सके और प्रमुख पुस्तकालयों में संरक्षित रहे। ट्रस्टी अंबर अग्रवाल ने जानकारी दी कि महाकुंभ के दौरान काउंसिल को सेक्टर-23 में स्थान आवंटित हुआ था। काउंसिल का प्रयास है कि पुस्तक की पहली प्रति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भेंट की जाए। सचिव पितांबर मिश्र ने बताया कि अब काउंसिल का विचार नासिक, हरिद्वार एवं उज्जैन में आयोजित होने वाले कुंभ पर भी इसी प्रकार के दस्तावेज तैयार किए जाने का है।

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
Date: 31.12.2025

महाकुंभ का महामंथन : सनातन गौरव पर शोधपरक साहित्य हुआ तैयार

11 वर्षीय बाल व्यास वैदेहीनंदन वेदांत के विचार पर रिसर्च काउंसिल ने तैयार किया साहित्य

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली। रामायण रिसर्च काउंसिल ने प्रयागराज महाकुंभ-2025 पर एक विस्तृत, शोधपरक साहित्य 'महाकुंभ का महामंथन' तैयार किया है। इसका मूल विचार 11 वर्षीय बाल व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांत ने दिया। काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र ने बताया कि इसमें महाकुंभ, अखाड़ों और स्नान से जुड़ी आध्यात्मिक जानकारियां संकलित की गई हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियां सनातन संस्कृति के गौरव पर शोध कर गर्वान्वित हो सकें।

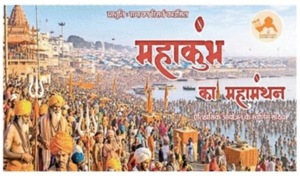

पुस्तक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और संघ के क्षेत्रीय संघचालक (उत्तर क्षेत्र) पवन जिंदल के विचार शामिल हैं। राष्ट्रीय युवा संयोजक जयराम विप्लव के अनुसार, इसमें महाकुंभ की तैयारी, आयोजन, क्रियान्वयन और वैश्विक संदेश को क्रमबद्ध एवं आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। काउंसिल ने सामग्री को डिजिटल रूप से प्रसारित करने की भी योजना बनाई है।

ट्रस्टी देव रत्न शर्मा ने बताया कि पुस्तक हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार की गई, ताकि सनातन परंपरा विश्व स्तर पर पहुंच सके और प्रमुख पुस्तकालयों में संरक्षित रहे।

ट्रस्टी अंबर अग्रवाल ने जानकारी दी कि महाकुंभ के दौरान काउंसिल को सेक्टर-23 में स्थान आवंटित हुआ था। काउंसिल का प्रयास है कि पुस्तक की पहली प्रति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भेंट की जाए। सचिव पितांबर मिश्र ने बताया कि अब काउंसिल का विचार नासिक, हरिद्वार एवं उज्जैन में आयोजित होने वाले कुंभ पर भी इसी प्रकार के दस्तावेज तैयार किए जाने का है।

नवोदय टाइम्स
DATE: 02.01.2026

महाकुंभ पर आकर्षक साहित्य काउंसिल ने किया तैयार

■ **महाकुंभ पर इस साहित्य का शीर्षक है 'महाकुंभ का महामंथन'**

गुड़गांव, 1 जनवरी (ब्यूरो): रामायण रिसर्च काउंसिल' ने महाकुंभ पर एक विस्तृत, शोधपरक एवं आकर्षक साहित्य को तैयार किया है। 'महाकुंभ का महामंथन' शीर्षक वाले इस कॉन्सेप्ट के सूत्रधार 11 वर्षीय बाल-व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांतजी हैं। इस विषय की जानकारी देते हुए काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र बताते हैं कि आने वाली पीढ़ी सदियों बाद भी इस विषय पर शोध कर सके, संदर्भ ले सके, ज्ञान प्राप्त कर सके तथा अपने सनातन के गौरव पर गर्व कर सके, इसके लिए हमने इस साहित्य में महाकुंभ, अखाड़ा व इस

अफोटो-17- बीते महाकुंभ की झलक।

दौरान स्नान से संबंधित कई आध्यात्मिक जानकारियों को सम्मिलित किया है। पितांबर कहते हैं कि इस साहित्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी, अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं संघ के क्षेत्रीय संघचालक उत्तर क्षेत्र पवन जिंदल ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, वहीं, यूपी के कई विभागों के तत्कालीन प्रमुख सचिव व अधिकारियों ने भी इसमें अपने विचार दिए हैं। वहीं, काउंसिल में राष्ट्रीय युवा संयोजक एवं भाजपा में राष्ट्रीय मीडिया पैनेलिस्ट जयराम विप्लव के अनुसार, इस आकर्षक साहित्य में हमने महाकुंभ की तैयारी, यह आयोजन, इसके क्रियान्वयन तथा इसके वैश्विक दूरगामी संदेश को क्रमबद्ध तरीके से कवर किया है। इस साहित्य 'महाकुंभ का महामंथन' की प्रस्तुति को देखेंगे तो आप कहेंगे कि महाकुंभ पर इस तरह का आकर्षक एवं व्यापक साहित्य आपके संज्ञान में नहीं आया है। काउंसिल के ट्रस्टी देव रत्न शर्मा के अनुसार, काउंसिल ने 'महाकुंभ का महामंथन' को अंग्रेजी में भी तैयार किया है ताकि सनातन परंपरा के इस ऐतिहासिक विषय महाकुंभ का महामंथन को कई देशों में ले जा सकें। वहीं, काउंसिल के ट्रस्टी अंबर अग्रवाल बताते हैं कि काउंसिल देश में सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन हेतु साहित्य-सृजन पर विशेष कार्य अनवरत करती रही है। काउंसिल के सचिव पितांबर कहते हैं कि आगामी नासिक, हरिद्वार एवं उज्जैन में आयोजित होने वाले कुंभ पर भी इसी तरह का दस्तावेज काउंसिल तैयार करेगी।

दैनिक भास्कर
DATE: 01.01.2026

महाकुंभ पर सबसे विस्तृत, शोधपरक एवं आकर्षक साहित्य काउंसिल ने किया तैयार

भास्कर समाचार सेवा

नई दिल्ली। रामायण रिसर्च काउंसिल ने महाकुंभ पर एक विस्तृत, शोधपरक एवं आकर्षक साहित्य को तैयार किया है। महाकुंभ का महामंथन शीर्षक वाले इस कॉन्सेप्ट के सूत्रधार 11 वर्षीय बाल-व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांतजी हैं। इस विषय की जानकारी देते हुए काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र बताते हैं कि आने वाली पीढ़ी सदियों बाद भी इस विषय पर शोध कर सके, संदर्भ ले सके, ज्ञान प्राप्त कर सके तथा अपने सनातन के गौरव पर गर्व कर सके, इसके लिए हमने इस साहित्य में महाकुंभ, अखाड़ा व इस दौरान स्नान से संबंधित कई आध्यात्मिक जानकारियों को सम्मिलित किया है। पितांबर कहते हैं कि इस साहित्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी, अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं संघ के क्षेत्रीय संघचालक (उत्तर क्षेत्र) अधिकारियों ने भी इसमें अपने विचार दिए हैं। वहीं, काउंसिल में राष्ट्रीय युवा संयोजक एवं भाजपा में राष्ट्रीय मीडिया पैनेलिस्ट जयराम विप्लव के अनुसार, इस आकर्षक साहित्य में हमने महाकुंभ की तैयारी, यह आयोजन, इसके क्रियान्वयन तथा इसके वैश्विक दूरगामी संदेश को क्रमबद्ध तरीके से कवर किया है। काउंसिल के ट्रस्टी देव रत्न शर्मा के अनुसार, काउंसिल ने 'महाकुंभ का महामंथन' को अंग्रेजी में भी तैयार किया है ताकि सनातन परंपरा के इस ऐतिहासिक विषय (महाकुंभ का महामंथन) को कई देशों में ले जा सकें। वहीं, काउंसिल के ट्रस्टी अंबर अग्रवाल बताते हैं कि काउंसिल देश में सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन हेतु साहित्य-सृजन पर विशेष कार्य अनवरत करती रही है। काउंसिल के सचिव पितांबर कहते हैं कि आगामी नासिक, हरिद्वार एवं उज्जैन में

विराट वैभव

DATE: 31.12.2025

‘महाकुंभ का महामंथन’ ग्रंथ की पहली प्रति प्रधानमंत्री मोदी को भेंट की जाएगी

- रामायण काउंसिल ने ग्रंथ की कवर फोटो रिलीज की
- ग्रंथ को हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में तैयार किया है
- नासिक, हरिद्वार व उज्जैन में आयोजित होने वाले कुंभ पर भी इसी तरह का ग्रंथ तैयार करेगी काउंसिल

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

‘रामायण रिसर्च काउंसिल’ नामक सुप्रसिद्ध संस्था ने महाकुंभ पर एक विस्तृत, शोधपरक एवं आकर्षक ग्रंथ को तैयार किया है। ‘महाकुंभ का महामंथन’ शीर्षक वाले इस कॉन्सेप्ट के सूत्रधार बाल-व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांत हैं। इस ग्रंथ की विस्तृत जानकारी देते हुए काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र ने बताया कि इस ग्रंथ की पहली प्रति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भेंट की जायेगी। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ी सदियों बाद भी इस विषय पर शोध कर सके, संदर्भ ले सके, ज्ञान प्राप्त कर सके तथा अपने सनातन धर्म के गौरव पर गर्व कर सके, इसके लिए हमने इस ग्रंथ में महाकुंभ, अखाड़ा की परंपरा व इस दौरान कुम्भ स्नान से संबंधित कई आध्यात्मिक जानकारियों को सम्मिलित किया है। पितांबर मिश्र ने बताया कि इस ग्रंथ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं संघ के क्षेत्रीय संघ चालक (उत्तर क्षेत्र) पवन जिंदल ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। काउंसिल के राष्ट्रीय युवा संयोजक एवं भाजपा में राष्ट्रीय मीडिया पैनेलिस्ट जयराम विप्लव के अनुसार, इस आकर्षक बहुरंगी ग्रंथ में रामायण रिसर्च काउंसिल ने महाकुंभ की तैयारी, आयोजन, इसके क्रियान्वयन तथा इसके वैश्विक दूरगामी संदेश को क्रमबद्ध तरीके से कवर किया है।

जयराम ने बताया कि ‘महाकुंभ का महामंथन’ नामक इस ग्रंथ की आकर्षक सामग्री को डिजिटल रूप से प्रसार करने के लिए www.mahakumbhinfo.com को भी तैयार किया है। इस प्रकार काउंसिल द्वारा एकत्रित महाकुंभ की सारी सामग्रियों को शीघ्र ही ऑनलाइन भी जनता के उपयोग के लिए उपलब्ध कराया जाएगा।उन्होंने कहा कि रामायण काउंसिल परिवार की इच्छा है कि इसकी पहली प्रति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेंट करने के बाद ही इसे जनमानस के सामने लाया जाएगा।

रामायण काउंसिल के ट्रस्टी देव रत्न शर्मा के अनुसार, काउंसिल ने ‘महाकुंभ का महामंथन’ को अंग्रेजी भाषा में भी तैयार किया है ताकि सनातन परंपरा के इस ऐतिहासिक विषय- (महाकुंभ का महामंथन) को दूसरे देशों के प्रबुद्ध वर्ग तक ले जाया जा सकें। देव रत्न ने बताया कि हमारा संकल्प होता है कि ऐसे ऐतिहासिक आयोजनों को हम सहस्त्राब्दियों बाद भी शोध हेतु संरक्षित रख सकें, इसके लिए हम दुनिया के लोकप्रिय पुस्तकालयों में इसे उपलब्ध कराने का प्रयत्न कर रहे हैं ताकि इस विषय पर शोध कार्य करने वाले शोधकर्ताओं को भी इसका लाभ मिल सके।

काउंसिल के ट्रस्टी अंबर अग्रवाल ने बताया कि काउंसिल देश में सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन हेतु साहित्य-सृजन पर विशेष कार्य अनवरत करती रही है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2025 में प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ के दौरान सेक्टर-23 में प्रयागराज मेला प्राधिकरण (उत्तर प्रदेश) द्वारा काउंसिल को भी स्थान आवंटित किया गया था। श्री अंबर ने इसके लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का धन्यवाद किया। महाकुंभ को मानस-पटल पर सदैव जीवंत रखने के दृष्टिकोण से ही काउंसिल ने इस आकर्षक ‘कॉफीटेबल-बुक’ (शीर्षक- महाकुंभ का महामंथन) को प्रकाशित किया है। काउंसिल के सचिव पितांबर ने अंत में कहा कि आगामी नासिक, हरिद्वार एवं उज्जैन में आयोजित होने वाले कुंभ पर भी इसी तरह का ग्रंथ रामायण रिसर्च काउंसिल तैयार करेगी।

DATE: 30.12.2025

WWW.AMARUJALA.COM

अमर उजाला

‘रामायण रिसर्च काउंसिल’ ने तैयार किया महाकुंभ पर विस्तृत, शोधपरक एवं आकर्षक साहित्य

काव्य डेस्क

Halchal

- महाकुंभ पर इस साहित्य का शीर्षक है- ‘महाकुंभ का महामंथन’
- काउंसिल ने इस साहित्य की कवर फोटो रिलीज करते हुए कहा, प्रधानमंत्री को पहली प्रति भेंट करने का प्रयत्न करेंगे।
- कहा, ईश्वरीय कृपा एवं प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में डबल-इंजन सरकार के कुशल-प्रबंधन के कारण ही ये यज्ञ पूरा हुआ।
- महाकुंभ की सफलता को विश्वव्यापी-स्तर पर ले जाने के लिए संस्था ने इसे हिन्दी और अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में तैयार किया।
- 11 वर्ष के बाल-व्यास वैदेहीनंदन वेदांत ने दिया था काउंसिल को ये कॉन्सेप्ट
- नासिक, हरिद्वार और उज्जैन में आयोजित कुंभ पर भी इसी तरह का दस्तावेज तैयार करेगी काउंसिल

संस्था 'रामायण रिसर्च काउंसिल' ने महाकुंभ पर एक विस्तृत, शोधपरक एवं आकर्षक साहित्य तैयार किया है। 'महाकुंभ का महामंथन' शीर्षक वाले इस कॉन्सेप्ट के सूत्रधार 11 वर्षीय बाल-व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांतजी हैं। इस विषय की जानकारी देते हुए काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र बताते हैं कि आने वाली पीढ़ी सदियों बाद भी इस विषय पर शोध कर सके, संदर्भ ले सके, ज्ञान प्राप्त कर सके तथा अपने सनातन के गौरव पर गर्व कर सके, इसके लिए हमने इस साहित्य में महाकुंभ, अखाड़ा व इस दौरान स्नान से संबंधित कई आध्यात्मिक जानकारियों को सम्मिलित किया है। पितांबर कहते हैं कि इस साहित्य में लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी जी, अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं संघ के क्षेत्रीय संघचालक (उत्तर क्षेत्र) पवन जिंदल जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, वहीं, यूपी के कई विभागों के तत्कालीन प्रमुख सचिव व अधिकारियों ने भी इसमें अपने विचार दिए हैं।

वहीं, काउंसिल में राष्ट्रीय युवा संयोजक एवं भाजपा में राष्ट्रीय मीडिया पैनेलिस्ट जयराम विप्लव के अनुसार, इस आकर्षक साहित्य में हमने महाकुंभ की तैयारी, यह आयोजन, इसके क्रियान्वयन तथा इसके वैश्विक दूरगामी संदेश को क्रमबद्ध तरीके से कवर किया है। पूर्ण विश्वास के साथ जयराम बताते हैं कि जब आप इस साहित्य 'महाकुंभ का महामंथन' की प्रस्तुति को देखेंगे तो आप कहेंगे कि महाकुंभ पर इस तरह का आकर्षक एवं व्यापक साहित्य आपके संज्ञान में नहीं आया है। जयराम बताते हैं कि काउंसिल ने इन सभी सामग्रियों को डिजिटल रूप से प्रसार करने के लिए www.mahakumbhinfo.com को भी तैयार किया है, जिस पर हमारे पास एकत्रित हुए महाकुंभ की सारी सामग्रियों को शीघ्र ही ऑनलाइन भी किया जाएगा। उनके अनुसार, पूरे काउंसिल परिवार की इच्छा है कि इसकी पहली प्रति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को भेंट करने के बाद ही जाए इसे जनमानस में लाया जाए।

काउंसिल के ट्रस्टी देव रत्न शर्मा के अनुसार, काउंसिल ने 'महाकुंभ का महामंथन' को अंग्रेजी में भी तैयार किया है ताकि सनातन परंपरा के इस ऐतिहासिक विषय (महाकुंभ का महामंथन) को कई देशों में ले जा सकें। देव रत्न कहते हैं कि हमारा संकल्प होता है कि ऐसे ऐतिहासिक आयोजनों को हम सहस्त्राब्दियों बाद भी शोध हेतु संरक्षित रख सकें, इसके लिए हम दुनिया के लोकप्रिय पुस्तकालयों से संपर्क करते हैं और ऐसे साहित्य को रखवाने का प्रयत्न करते हैं।

वहीं, काउंसिल के ट्रस्टी अंबर अग्रवाल बताते हैं कि काउंसिल देश में सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन हेतु साहित्य-सृजन पर विशेष कार्य अनवरत करती रही है। वह जानकारी देते हैं कि वर्ष 2025 में प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ के दौरान सेक्टर-23 में भी प्रयागराज मेला प्राधिकरण (उत्तर प्रदेश) द्वारा काउंसिल को भी स्थान आवंटित किया गया था। अंबर ने इसके लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का धन्यवाद देते हुए कहा कि महाकुंभ को मानस-पटल पर सदैव जीवंत रखने के दृष्टिकोण से काउंसिल ने एक आकर्षक 'कॉफीटेबल-बुक' (शीर्षक- महाकुंभ का महामंथ) को प्रकाशित किया है।

काउंसिल के सचिव पितांबर कहते हैं कि आगामी नासिक, हरिद्वार एवं उज्जैन में आयोजित होने वाले कुंभ पर भी इसी तरह का दस्तावेज काउंसिल तैयार करेगी।

हिन्दुस्तान

DATE: 01.01.2026

महाकुंभ पर आकर्षक साहित्य तैयार

नई दिल्ली। रामायण रिसर्च काउंसिल ने महाकुंभ पर शोधपरक और आकर्षक साहित्य ‘महाकुंभ का महामंथन’ तैयार किया है। इस साहित्य के सूत्रधार 11 वर्षीय बाल-व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांतजी हैं। काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र ने बताया कि ग्रंथ का उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों के लिए महाकुंभ से जुड़े ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक तथ्यों का दस्तावेजीकरण करना है। इसमें अखाड़ों की परंपरा और स्नान के आध्यात्मिक महत्व का विस्तृत वर्णन शामिल है।

पंजाब केसरी

DATE: 01.01.2026

महाकुंभ पर सबसे विस्तृत शोधपरक साहित्य किया तैयार

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : रामायण रिसर्च काउंसिल" ने महाकुंभ पर एक विस्तृत, शोधपरक एवं आकर्षक साहित्य को तैयार किया है। ‘महाकुंभ का महामंथन" शीर्षक वाले इस कॉन्सेप्ट के सूत्रधार 11 वर्षीय बाल-व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांतजी हैं। इस विषय की जानकारी देते हुए काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र बताते हैं कि आने वाली पीढ़ी सदियों बाद भी इस विषय पर शोध कर सके, संदर्भ ले सके, ज्ञान प्राप्त कर सके तथा अपने सनातन के गौरव पर गर्व कर सके, इसके लिए हमने इस साहित्य में महाकुंभ, अखाड़ा व इस दौरान स्नान से संबंधित कई आध्यात्मिक जानकारियों को सम्मिलित किया है।

पितांबर कहते हैं कि इस साहित्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी, अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं संघ के क्षेत्रीय संघचालक (उत्तर क्षेत्र) पवन जिंदल जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, वहीं, यूपी के कई विभागों के तत्कालीन प्रमुख सचिव व अधिकारियों ने भी इसमें अपने विचार दिए हैं।

वहीं, काउंसिल में राष्ट्रीय युवा संयोजक एवं भाजपा में राष्ट्रीय मीडिया पैनेलिस्ट जयराम विप्लव के अनुसार, इस आकर्षक साहित्य में हमने महाकुंभ की तैयारी, यह आयोजन, इसके क्रियान्वयन तथा इसके वैश्विक दूरगामी संदेश को क्रमबद्ध तरीके से कवर किया है। पूर्ण विश्वास के साथ जयराम बताते हैं कि जब आप इस साहित्य ‘महाकुंभ का महामंथन" की प्रस्तुति को देखेंगे तो आप कहेंगे कि महाकुंभ पर इस तरह का आकर्षक एवं व्यापक साहित्य आपके संज्ञान में नहीं आया है।

अमर उजाला

DATE: 02.01.2026

महाकुंभ पर विस्तृत और शोधपरक साहित्य तैयार

संवाद न्यूज एजेंसी

नई दिल्ली। रामायण रिसर्च काउंसिल ने महाकुंभ पर एक विस्तृत और शोधपरक साहित्य तैयार किया है। 'महाकुंभ का महामंथन' शीर्षक वाले इस अवधारणा के सूत्रधार 11 वर्षीय बाल-व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांतजी हैं। काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र ने बताया कि आने वाली पीढ़ी सदियों बाद भी इस विषय पर शोध, संदर्भ और ज्ञान प्राप्त कर अपने सनातन धर्म पर गर्व कर सकें, इसके लिए हमने इस साहित्य में महाकुंभ, अखाड़ा और स्नान से संबंधित कई आध्यात्मिक जानकारियों को सम्मिलित किया है।

पितांबर मिश्र ने बताया कि इस साहित्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं संघ के क्षेत्रीय संघचालक (उत्तर क्षेत्र) पवन जिंदल ने भी अपने विचार रखे हैं। काउंसिल ने इन सभी सामग्रियों को डिजिटल रूप से प्रसार करने के लिए www.mahakumbhinfo.com को भी तैयार किया है, जिस पर हमारे पास एकत्रित हुए महाकुंभ की सारी सामग्रियों को शीघ्र ही ऑनलाइन भी किया जाएगा। काउंसिल के ट्रस्टी देव रत्न शर्मा ने बताया कि 'महाकुंभ का महामंथन' को अंग्रेजी में भी तैयार किया गया है।

DATE: 01.01.2026

NBT नवभारत टाइम्स

महाकुंभ पर बुकलेट, पहली कॉपी मोदी को

विस्तृत शोध के बाद ‘रामायण रिसर्च काउंसिल’ ने तैयार की है ये बुकलेट।

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली : रामायण रिसर्च काउंसिल ने महाकुंभ पर एक विस्तृत और शोध के बाद एक बुकलेट को तैयार किया है। ‘महाकुंभ का महामंथन’ शीर्षक वाले इस कॉन्सेप्ट को बाल-व्यास वैदेहीनंदन पंडित वेदांत ने तैयार किया है। काउंसिल के सचिव पितांबर मिश्र ने बताया कि इस बुकलेट की पहली प्रति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भेंट की जाएगी। आने वाली पीढ़ी इस विषय पर शोध कर सके, संदर्भ ले सके, इसलिए बुकलेट में महाकुंभ, अखाड़ा की परंपरा और कुंभ स्नान से संबंधित कई आध्यात्मिक जानकारियों को शामिल किया गया है।

प्रयागराज में महाकुंभ का रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा प्रचार प्रसार

NOIDA SECTOR-18

Screen No. 1,2,3,4,5

Screen No. 6,7,8,9,10

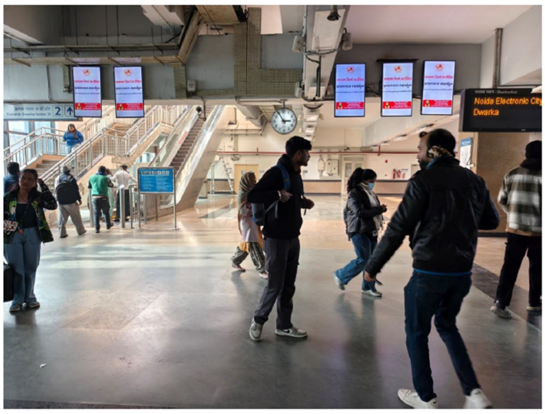

Screen No. 11,12,13,14

Screen No. 15,16,17

Screen No. 18

Screen No. 19

Screen No. 20,21,22,23,24

Screen No. 25

Screen No. 26,27

Screen No. 28,29

NOIDA CITY CENTRE

Screen No. 1,2

Screen No. 3

Screen No. 4

Screen No. 5

Screen No. 6

Screen No. 7

GORAKHPUR RAILWAY STATION

HARIDWAR RAILWAY STATION

VARANASI RAILWAY STATION

VARANASI RAILWAY STATION

BAREILLY RAILWAY STATION

LUCKNOW RAILWAY STATION

मा. प्रधानमंत्री जी का विशेष आभार

हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र भाई मोदी जी जिन्होंने काउंसिल के अनुरोध पर अपना विचार इसमें शामिल करने हेतु प्रेषित किया। मा. प्रधानमंत्री जी के अलावा अखाड़ा परिषद के पूज्य अध्यक्ष एवं संघ के क्षेत्रीय संघचालक (उत्तर क्षेत्र) श्री पवन जिंदल जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। वहीं, यूपी के कई विभागों के तत्कालीन प्रमुख सचिव व अधिकारियों ने भी इसमें अपने विचार दिए।

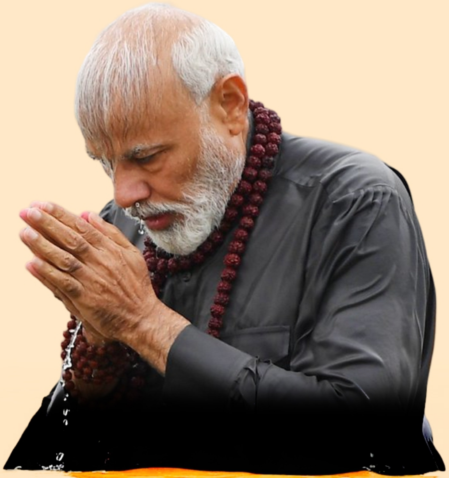

वर्ष 2025 में प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ के बाद काउंसिल के आग्रह पर मा. प्रधानमंत्री जी के कार्यालय से प्रेषित विचार।

अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में मैंने देवभक्ति से देशभक्ति की बात कही थी। प्रयागराज में महाकुंभ के दौरान सभी देवी-देवता जुटे, संत- महात्मा जुटे, बाल-वृद्ध जुटे, महिलाएं-युवा जुटे, और हमने देश की जागृत चेतना का साक्षात्कार किया। ये महाकुंभ एकता का महाकुंभ था, जहां 140 करोड़ देशवासियों की आस्था एक साथ एक समय में इस एक पर्व से आकर जुड़ गई थी।

उन 45 दिनों में प्रतिदिन, मैंने देखा, कैसे देश के कोने-कोने से लाखों-लाख लोग संगम तट की ओर बढ़े जा रहे हैं। संगम पर स्नान की भावनाओं का ज्वार, लगातार बढ़ता ही रहा। हर श्रद्धालु बस एक ही धुन में था - संगम में स्नान । मां गंगा, यमुना, सरस्वती की त्रिवेणी हर श्रद्धालु को उमंग, ऊर्जा और विश्वास के भाव से भर रही थी।

प्रयागराज में हुआ महाकुंभ का आयोजन, आधुनिक युग के मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स के लिए, प्लानिंग और पॉलिसी एक्सपर्ट्स के लिए, नए सिरे से अध्ययन का विषय बना है। आज पूरे विश्व में इस तरह के विराट आयोजन की कोई दूसरी तुलना नहीं है, ऐसा कोई दूसरा उदाहरण भी नहीं है।

पूरी दुनिया हैरान है कि कैसे एक नदी तट पर, त्रिवेणी संगम पर इतनी बड़ी संख्या में करोड़ों की संख्या में लोग जुटे। इन करोड़ों लोगों को ना औपचारिक निमंत्रण था, ना ही किस समय पहुंचना है, उसकी कोई पूर्व सूचना थी। बस, लोग महाकुंभ चल पड़े... और पवित्र संगम में डुबकी लगाकर धन्य हो गए।

भारत के युवाओं का इस तरह महाकुंभ में हिस्सा लेने के लिए आगे आना, एक बहुत बड़ा संदेश है। इससे ये विश्वास दृढ़ होता है कि भारत की युवा पीढ़ी हमारे संस्कार और संस्कृति की वाहक है और इसे आगे ले जाने का दायित्व समझती है और इसे लेकर संकल्पित भी है, समर्पित भी है।

श्री नरेंद्र मोदी जी
मा. प्रधानमंत्री, भारत सरकार

।। श्री महा गणेशाय नमः।।

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

अध्यक्ष : श्री महन्त रविन्द्र पुरी, माँ मनसा देवी मंदिर ट्रस्ट, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
महामंत्री : श्री महन्त हरि गिरी, पंच दसनाम जूना अखाड़ा माया देवी मन्दिर, हरिद्वार
कार्यालय : शिव शक्ति भवन, निरंजनी अखाड़ा रोड, मायापुर, हरिद्वार - 249401, मोबाइल नं.: 9193105060

दिनांक 12.09.2025

प्रस्तावना

मैं यह जानकर आनंदित हूं कि 'रामायण रिसर्च काउंसिल' महाकुंभ पर एक दुर्लभ संकलन 'महाकुंभ का महामंधन' जनमानस में प्रस्तुत करने जा रही है। काउंसिल के 30 से अधिक सदस्य सतत रूप से पूरे महाकुंभ में सक्रिय रहे और महाकुंभ के दौरान की प्रमुख गतिविधियों को तथा संत व साधुओं की वाणी को वह राष्ट्रहित, विश्वहित और सनातनहित की दृष्टि से तैयार किया गया है। मुझे लगता है कि महाकुंभ के सफलतम रूप से आयोजित हो जाने के बाद इसकी नितांत आवश्यकता थी और इस विषय पर इससे अच्छा डोक्यूमेंटेशन और दूसरा नहीं हो सकता था।

महाकुंभ के आयोजन की चर्चा करें तो प्रयाग में एक तो 144 वर्षों के बाद का दुर्लभ संयोग था और दूसरा इसे संभालने की चुनौती। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह केवल महाकुंभ ही नहीं, बल्कि भारत का विश्व-गुरू बनने की दिशा में एक बड़ा पदार्पण था। पूरे सनातन परिवार का आयोजन था और उस सनातन के आयोजन की शक्ति को पूरी दुनिया ने महसूस किया। सब सनातन के रंग में रंगते दिखे। एक के बाद एक सेलिब्रिटी, उद्योगपति, सामाजिक क्षेत्रों के लोकप्रिय लोग, राजनीतिज्ञ, विभिन्न संस्थाओं के प्रहरी एवं कई अंतरराष्ट्रीय गणमान्य अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहो 10 लाख से अधिक लोगों ने पूरे 45 दिन के महाकुंभ में कल्पवास किया। कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि 66 करोड़ श्रद्धालुओं ने केवल 45 दिनों में स्नान किया। वो भी उस शहर में जिसकी आबादी केवल 25 लाख की है। हमलोगों ने आज तक इतना बड़ा और सफल आयोजन नहीं देखा था।

मैं केंद्र में श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार और उत्तर प्रदेश में श्री योगी आदित्यनाथ जी की सरकार का धन्यवाद देता हूं जिन्होंने संतों-साधुओं-नागाओं समेत हर एक आम जन की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा। सभी आने वाले श्रद्धालु महाकुंभ की व्यवस्थाओं से गदगद दिखे और सरकार की प्रशंसा करते हुए विदा हो रहे थे।

अब तक लोग धार्मिक पर्यटन को केवल शब्दों में सुनते थे, लेकिन सनातन ने अपनी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक शक्ति से पूरे देश को ऐसी झलक ऐसी दिखाई कि आज हार्वर्ड जैसी कई संस्थाओं में महाकुंभ के सफल आयोजन पर शोध हो रहा है। सबको आश्चर्य हुआ कि इतना बड़ा आयोजन, इतनी बड़ी भीड़, इतनी बड़ी व्यवस्था, इतना बड़ा प्रबंधन... हुआ कैसे... सत्य है, ऐसा लगा जैसे मां गंगा और नारायण स्वयं स्नान को अवतरित होने वाले हैं और इस हेतु देवगण महाकुंभ की व्यवस्थाओं को स्वयं संभाल रहे और संचालित कर रहे हों।

महाकुम्भ के सभी अमृत स्नान रिकॉर्डतोड़ उपस्थिति के साथ संपन्न हुए। पहली बार विश्व का सबसे बड़ा सनातन समागम हुआ। मैं वर्ष 1995 से सभी अर्धकुंभ और महाकुंभ में भाग लेता रहा हूं, लेकिन यह पहली बार था कि सुविधाएं इतनी उत्कृष्ट थीं। हमारी कल्पना से परे था। मैं इस महाकुंभ के बारे में केवल यही टिप्पणी कर सकता हूं कि, "न भूतो न भविष्यति।

मैंने अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष होने के नाते पहले ही मांग की थी कि हमारा मेला सुंदर, स्वच्छ और भव्य होना चाहिए, लेकिन प्रदेश सरकार ने जितना सोचा था, उससे अधिक हमें करके दिखाया। यह उनके मन में सनातन परंपरा के प्रति गहरे आदरभाव को दर्शाता है। मा. मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी साधु-संतों की सुविधाओं के बारे में बहुत चिंतित थे और उन्होंने व्यक्तिगत रूप से सभी का ध्यान रखा। वह कई सुविधाओं का निरीक्षण करने स्वयं आए और बहुत बार अखाड़ों का दौरा किया। एक कर्मचारी की तरह सबसे बातें करते रहे। कहीं किसी कमी पर निर्णय लेते रहे। यह हम संतों के लिए प्रसन्नता और गौरव का विषय रहा।

।। श्री महा गणेशाय नमः।।

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

अध्यक्ष : श्री महन्त रविन्द्र पुरी, माँ मनसा देवी मंदिर ट्रस्ट, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

महामंत्री : श्री महन्त हरि गिरी, पंच दसनाम जूना अखाड़ा माया देवी मन्दिर, हरिद्वार

कार्यालय : शिव शक्ति भवन, निरंजनी अखाड़ा रोड, मायापुर, हरिद्वार - 249401, मोबाइल नं.: 9193105060

दिनांक 12.09.2025

हम सौभाग्यशाली हैं कि हिंदू आखिरकार जाग गए हैं और महाकुंभ में दिखी यह हिन्दू एकता देश दुनियाभर में सकारात्मक प्रभाव डालेगी। पहले दूसरे धर्मावलंबियों को लगता था कि हिंदू एकजुट नहीं हैं और उन्होंने इसका कई बार गलत फायदा भी उठाया। लेकिन इस महाकुंभ ने सबकी सोच को बदल दिया और दिखा दिया कि यह नए भारत का सूर्योदय है। सनातन का अमृतकाल है और इस काल में अब हिंदू अपने धर्म की रक्षा के लिए एकजुट हैं। संदेश दिया कि जो सनातन शत्र और शास्त्र के लिए जाना जाता था, आवश्यकता पड़ने पर सनातन-प्रहरी हर एक अस्त्र का प्रयोग अब करेंगे।

महाकुंभ से हमारे हिंदू राष्ट्र की विचारधारा को मजबूती मिली है। हम भारत को हिंदू राष्ट्र मानते हैं और महाकुंभ के बाद इस विचार को और अधिक मजबूती मिली है। यह इसलिए संभव हो सका, क्योंकि हमने आस्थावान प्रतिनिधियों के हाथों में सत्ता की चाबी दी है। हमने उन संतरूपी सेवक को राष्ट्र और प्रदेश की जिम्मेदारी दी है जो स्वयं सनातन के रक्षक हैं। जो स्वयं मंदिरों में नतमस्तक होते हैं और अपनी श्रद्धा दिखाते हैं। यह हम संतों के लिए गर्व की बात है, क्योंकि अब तक किसी प्रधानमंत्री ने इस प्रकार की आस्था नहीं दिखाई थी। अब हम सब मिलकर हिंदू राष्ट्र के रूप में एकजुट हैं और इस मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं।

सबसे बड़ी बात कि जहां आधुनिकता के नाम पर एक बड़ी ताकत हमारे युवाओं को अब तक पाश्चात्य में ढकेलने का प्रयत्न कर रही थी, वहीं इस महाकुंभ में 73 देशों के राजनयिक और 116 विशिष्ट विदेशी अतिथि तीर्थनगरी प्रयागराज पहुंचे। हमारे आचार्य महामंडलेश्वर, महामंडलेश्वर और संतों वे कई विदेशी श्रद्धालु दीक्षा लेते रहे, आशीर्वाद लेते रहे, एक सफल जीवन जीने के लिए प्रेरणादायी ज्ञान की बातें सिखते रहे। यह दर्शाता है कि अब हम दुनिया के पाश्चात्य को नहीं, बल्कि दुनिया हमारे सनातन संस्कृति का अनुसरण करने जा रही है। इसी विषय को हम समझाते थे कि सनातन कोई धर्म नहीं बल्कि जीवन जीने की एक पद्धति है। दुनिया ने उसे मान लिया। दुनिया ने देखा कि हमारी अपनी संस्कृति पर हमें कितनी अधिक श्रद्धा और विश्वास है। हम जब विश्व-गुरु बनने का पक्ष को रखते हैं जो दुनिया ने उसके 'क्यों का कारण देखा। देखा कि हमारी संस्कृति यूं ही पूजनीय नहीं है। इसके संयोने के पीछे बहुत मेहनत है। देखा कि सनातन की संस्कृति और हमारा सनातन परिवार कितनी विशाल और पवित्र सोच वाला है।

कुंभ भारत की वह प्राण-शक्ति स्थल है जहां सनातन लोक अपनी गहरी आस्था के साथ आकर अपने आदर्श स्थापित करता है। इसमें संतों, साधकों और ज्ञान परंपरा के माध्यम से देश, समाज और लोकहित में निर्णय भी लिए जाते हैं। और जो लोग संतों की आवाज को दबाना चाहते हैं, उन्हें बता दें कि भारत की संत परंपरा को कोई भी शक्ति भय से दबा या डरा नहीं सकती। कुंभ का उद्देश्य है- प्लोक कल्याण।

ऐसी मान्यता है कि कुंभ में स्वयं देवगण नर-शरीर धारण कर स्नान को धरा पर अवतरित होते हैं। जीता-जागता प्रमाण दिखा कि इस महाकुंभ ने कई रिकॉर्ड बनाकर भारतवर्ष का मान बढ़ाया और सौभाग्य की अमृत वर्षा की। यह नारायण की कृपा से ही संभव था। साथ ही, इस महाकुम्भ से सकल विश्व को भारत की सनातन शक्ति का दर्शन, प्रदर्शन और संदेश मिला।

संत और साधक भारत की सनातन संस्कृति के शक्तिपुंज हैं। कुंभ ही एक ऐसा अवसर होता है, जब लोक अपनी इस शक्तिपुंज का साक्षात दर्शन भी करता है और उनसे मार्गदर्शन भी प्राप्त करता है।

।। श्री महा गणेशाय नमः।।

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

अध्यक्ष : श्री महन्त रविन्द्र पुरी, माँ मनसा देवी मंदिर ट्रस्ट, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
महामंत्री : श्री महन्त हरि गिरी, पंच दसनाम जूना अखाड़ा माया देवी मन्दिर, हरिद्वार
कार्यालय : शिव शक्ति भवन, निरंजनी अखाड़ा रोड, मायापुर, हरिद्वार - 249401, मोबाइल नं.: 9193105060

दिनांक 12.09.2025

प्रयागराज में महाकुम्भ की सफलता से अब सनातन की शक्ति दिनों-दिन संवर्धित हो रही है। अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा से शुरू हुई सनातन के पुनर्जागरण की यात्रा महाकुम्भ तक आते-आते विशाल फलक प्राप्त कर चुकी है।

हम जिस महाकुंभ की चर्चा कर रहे हैं, उसको हम इस सदी का सबसे बड़ा आयोजन मानते हैं और इस ऐतिहासिक आयोजन पर "रामायण रिसर्च काउंसिल' ने जो पूरे महाकुंभ के दौरान पवित्र विषयों, अनुभवों एवं गतिविधियों का यह संकलन 'महाकुंभ का महामंथन' तैयार किया है, वह सदियों के लिए एक प्रेरणा का केंद्र बनेगा। काउंसिल ने जब मुझे पूरा विषय समझाया था तो मन प्रसन्नचित हो गया था कि महाकुंभ के बाद भविष्य की दृष्टि से इतना सुंदर संकलनरूपी दस्तावेज पर कार्य हो रहा है।

मैं इस महाकुंभ के महामंधन को उसी तरह मानता हूं, जैसे समुद्र मंथन में 14 बहुमूल्य रत्न प्राप्त हुए थे। उसी तरह ये 'महाकुंभ का महामंथन' हमें राष्ट्र और सनातनहित में हमें हमारे कर्तव्यबोध की याद दिलाता रहेगा। वर्ष 2025 में महाकुंभ की इस ऐतिहासिक गाथा को जीवंत रखेगा।

आइए, हम सब मिलकर काउंसिल की पहल को बल दें और इस 'महाकुंभ का महामंथन' की सफलता की प्रार्थना करें। ऊं नमो नारायण।

M Ravindrapuri

महंत रवीन्द्र पुरी

अध्यक्ष- अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद्,

मनसा देवी मंदिर ट्रस्ट, हरिद्वार

महाकुंभ, सनातन एवं हिंदु संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम् का प्रतीक

सनातन और हिंदुओं की भूमि भारत है। प्रयागराज इस पवित्र भूमि पर सबसे पवित्र तीर्थ स्थानों में से एक माना जाता है। यहां तीन नदियों- पवित्र गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। कुंभ का आयोजन हर वर्ष होता है और महाकुंभ का आयोजन हर 12 वर्ष में होता है। 'प्रयागराज' का अर्थ इस प्रथम यज्ञ के 'प्र' और 'याग' शब्दों से लिया गया है। भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि का पहला यज्ञ जिस स्थान पर किया था, उसका नाम 'प्रयाग' पड़ा। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा महाकुम्भ 2025 का आयोजन बड़ी सफलता के साथ किया गया है।

मैं महाकुंभ के दौरान कई आयोजनों में शामिल हुआ। मुझे वहां की बहुत सी गतिविधियों का निरीक्षण करने का अवसर प्राप्त हुआ। महाकुंभ मेले में कहीं वॉटर लेजर शो समेत कई सांस्कृतिक व आध्यात्मिक आयोजन श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ था, तो कहीं मनोरंजन के साथ दर्शकों को तीर्थ क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के परिचय का उदाहरण था। कहीं कोई उद्योगपति अपनी पूजा के बाद भोजन प्रसाद वितरित करते देखे जाते थे तो कहीं कोई लोकप्रिय व्यक्ति संतों तथा श्रद्धालुओं की सेवा करते पाए जाते थे। कोई भगवान के वेश में भगवत-संदेश देने के प्रयत्न में था, तो कोई अघोरी स्वरूप धारण कर कुंभ के सनातनी पर्याय को समझाने की जुगत में था। कहीं शाम होते गंगा तट पर मंत्रोच्चार के बीच आरती और हजारों दीयों से जगमगता तट तीर्थयात्रियों को आनंदित करने की व्यवस्थाओं में जुटा था, तो कोई आह्लादित करने के साथ अविस्मरणीय आध्यात्मिक अनुभूति कराने में लगा था। कोई शंख और रुद्राक्ष बेचकर इसकी महत्ता समझा रहा था, , तो कहीं कोई मेला क्षेत्र में अनोखे अंदाज में बांसुरी बेच रहा था। एक ओर किसी प्रदेश का पूरा कैबिनेट मंत्रिमंडल का जत्था ही संगम में डुबकी लगाने आ रहा था, तो कहीं कोई फिल्मस्टार या लोकप्रिय हस्ती अपनी पहचान छुपाए अकेले में भगवत नाम ले रहा था। कहीं 7.5 करोड़ रुद्राक्ष से निर्मित द्वादश ज्योतिर्लिंग का भव्य स्वरूप श्रद्धालुओं को लुभा रहा था, कहीं दिव्य हवन-कुंड में आहुतियां डाली जा रही थीं, कहीं पांडाल ही ऐसा बनाया गया था, जो दिव्य मंदिर की आभा प्रस्फुटित कर रहा था । सचमुच महाकुंभ में सनातन के इतने रंग नज़र आ रहे थे कि कोई भी उसे देख गौरवान्वित हो जाता था, भावुक हो जाता था और उस रंग में रंगने को तत्पर हो जाता था। सनातन, हिन्दुत्व और देवताओं में जय-जयकार को स्वतः ही अंतर्मन के साथ विवश हो जाता था।

महाकुंभ के आयोजन पर एक दैवीय कृपा ही थी। हमारे पूज्य संत कहा करते हैं कि कुंभ में अमृत स्नान को देवता भी प्रतीक्षारत होते हैं और वह मनुष्य रूप लेकर इस दौरान स्नान करने आते हैं। कुछ ऐसी ही अनुभूति हुई । चिंतन का विषय है कि उत्तर प्रदेश का एक शहर जिसकी जनसंख्या ही 25 लाख हो, वहां 66 करोड़ श्रद्धालुओं का केवल 45 दिनों में आ जाना और इतनी भीड़ के बावजूद सब प्रबंधित तौर पर संचालित होते रहना और जब उन श्रद्धालुओं का प्रस्थान होना, या मीडिया से बातें करना तो एक विशिष्ट अनुभव का उल्लेख करने के साथ अपने-अपने सोशल मीडिया पर अनुभव साझा करना इसका तात्पर्य था कि यह ईश्वर द्वारा ही संचालित व्यवस्था थी।

अभी तक के जो कुंभ आयोजित हुए थे, उनकी अपेक्षा इस बार के महाकुंभ में तकनीक की बहुत बड़ी भूमिका रही। तकनीक के माध्यम से ही इस बार के महाकुंभ को दिव्य, भव्य और डिजिटल महाकुंभ बनाया जा सका। सभी विभागों ने कुशलता साथ इस मेले को संपन्न कराया। प्रयागराज जनपद के आसपास के सभी गांवों को सड़क मार्ग से जोड़ा गया था, ताकि कहीं से कोई आए, उन्हें संगम तट तक आने में कठिनाई न हो। यही कारण था कि महाकुंभ में आए हुए लाखों लोगों ने गांवों में 'होम स्टे' किया। गांवों से मेला क्षेत्र और शहर तक आवागमन की सुविधाएं भी सुगम थीं। मेरा मानना है कि महाकुंभ मेला क्षेत्र से 100 किलोमीटर तक के आसपास की अर्थव्यवस्था में चौतरफा विकास हुआ है।

महाकुंभ पर लिखना चाहें तो आपके लिए कई पुस्तिकाएं कम पड़ जाएंगी। ऐसा सफल आयोजन रहा ये बीता महाकुंभ। लेकिन अंत में एक महत्त्वपूर्ण विषय की ओर ध्यान केंद्रित करता हूं। चूंकि हमलोगों का अब तक का जीवन ही प्रभु श्रीरामलला के जन्मस्थान अयोध्या में मंदिर संघर्ष को लेकर समर्पित रहा। ऐसे में एक सुखद समाचार मिला कि अयोध्या में प्रभु श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद पूरे वर्षभर 4 करोड़ के आसपास श्रद्धालु भगवान के दर्शन को आए, तो वहीं महाकुंभ के दौरान अकेले 45 दिनों में ही 1.26 करोड़ लोगों ने प्रयाग में स्नान के बाद अयोध्या जाकर दिव्य-भव्य-नव्य मंदिर और हमारे प्रभु का दर्शन किया जो मेरे लिए भावुक कर देने वाला विषय था।

एक और चिंतन-योग्य विषय | महाकुंभ जो इस वर्ष भारतवर्ष में प्रयाग की धरती पर आयोजित हुआ। यह भव्य-दिव्य-श्रेष्ठ तो था ही, परंतु पूरे विश्व को एक और संदेश दिया। जो भारत के बारे में एक सोच करते थे कि यहां छुआछूत है, भेदभाव ऊंच-नीच है, यहां जाति-मत-पंथ है, वे सब एक साथ मिलकर नहीं बैठ सकते, इसके उलट महाकुंभ ने प्रमाणित कर दिखाया कि भारत में जो हम बोलते हैं- अनेकता में एकता, वह आज भी है और पूरा सनातन परिवार एकजुट है। कोई ताकत उन्हें बांट नहीं सकती। यही हिंदू संस्कृति की विशेषता है जो इस महाकुंभ में उभरकर सामने आया है। ध्यान देने योग्य बात है कि जब से सृष्टि का निर्माण भगवान ने किया है तब से इतना बड़ा आयोजन शायद ही कभी हुआ होगा। एक विलक्षण आयोजन में एक साथ 140 करोड़ में से 66 करोड़ समाज ने आकर एक साथ डुबकी लगाई, एक संगम में डुबकी लगाई, यह इस बात का प्रमाण है।

अगर हम इसको ध्यान से विचार करें तो पाएंगे कि भारत के शत-प्रतिशत लोग महाकुंभ में आए। मेरा विचार है कि 140 करोड़ जनसंख्या में निश्चित ही पांच वर्ष से नीचे के बच्चे लगभग 10-15 करोड़ होंगे। 80-90 साल के ऊपर की आयु के लोग जो चल-फिर नहीं सकते, ऐसे भी 15-20 करोड़ लोग होंगे। अगर 40 करोड़ आबादी को निकाल दें और 66 करोड़ उसमें से आकर गए तो इन्हें दुनिया का सबसे बड़ा एक श्रेष्ठ बड़ा कार्यक्रम ही माना जाएगा।

मैं इसके आयोजकों को साधुवाद देता हूं। धन्यवाद करता हूं और इस प्रकार का एक संदेश पूरे विश्व को जाता है। ये जो हिंदू संस्कृति है, भारतीय संस्कृति है, वो शांतिप्रिय है, समाज को जोड़ने वाला है, उसके मन में वह वास्तव में 'वसुधैव कुटुंबकम' का प्रतीक है। उसका दर्शन रहा कि पूरा विश्व एक परिवार है और यही दर्शन इस महाकुंभ ने पूरे विश्व को कराया है।

मुझे लगता है कि ये श्रेष्ठ महाकुंभ, हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जी, वहां के यशस्वी मुख्यमंत्री जी और इसके आयोजकों की जो भूमिका है, उन्होंने एक कठिन तपस्या करके इस आयोजन को सफल किया है, इसके लिए मैं उनको बधाई देता हूं।

मैं 'रामायण रिसर्च काउंसिल' को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं कि आप महाकुंभ के दौरान की गतिविधियों और संतों द्वारा कही गई वाणी का संग्रह करने का जो प्रयत्न कर रहे हैं, वह अति प्रशंसनीय है। मेरे मन में कई बार यह चिंतन आया भी कि महाकुंभ इतना वृहद और सफल आयोजन बना, हमें डोक्यूमेंटेशन पर कार्य करना चाहिए। कई बार उत्तर प्रदेश के मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने भी महाकुंभ के डोक्यूमेंटेशन के लिए कई कार्यक्रमों में कहा है। हालांकि कई संस्थाएं राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसका शोध कर भी रही हैं, लेकिन मेरा अनुमान है कि वे संस्थाएं महाकुंभ में व्यवस्था और प्रबंधन की दृष्टि से शोध कर रही हैं 'रामायण रिसर्च काउंसिल' के अंतर्गत यह 'महाकुंभ का महामंथन' हमारे सनातन और राष्ट्र को एक सांस्कृतिक चेतना का संदेश देने वाला दस्तावेज होगा। साथ ही, एक सफल जीवनशैली के लिए संतों एवं सज्जनों की वाणी के दिव्य संदेश का भी एक संग्रह इस डोक्यूमेंटेशन में उद्धृत होगा जो इस धरा के लिए अमूल्य धरोहर सिद्ध होगा। मैं भगवान से इस 'महाकुंभ का महामंथन' के प्रकाशन एवं प्रसार के लिए मंगल कामनाएं करता हूं और इस कार्य हेतु जहां भी मेरे सहयोग की आवश्यकता होगी, सदैव तत्परता के साथ उपलब्ध रहने को आशान्वित करता हूं।

पूरे काउंसिल परिवार का सादर अभिनंदन ।

श्री पवन जिंदल जी

मा. क्षेत्रीय संघचालक (उत्तर क्षेत्र)
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

काउंसिल के विषय में अति-संक्षिप्त परिचय :

'रामायण रिसर्च काउंसिल' ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत संस्था है जिसका उद्देश्य देश में सांस्कृतिक मूल्यों का संवर्धन करना है। काउंसिल देश की एकमात्र ऐसी संस्था है जो प्रभु श्रीरामजी की जन्मभूमि अयोध्या और मां सीताजी के प्राकट्य-क्षेत्र सीतामढ़ी (बिहार) दोनों पर कार्य करती है। काउंसिल ने अयोध्या में श्रीराम-मंदिर संघर्ष पर वृहद शोधपरक साहित्य-स्वरूप ग्रंथ (1250 पृष्ठों का 'श्रीरामलला- मन से मंदिर तक') को तैयार किया। यह ग्रंथ लोकप्रिय प्रधानमंत्री आ. श्री नरेंद्र भाई मोदी जी के विशेष मार्गदर्शन (31 अगस्त 2020 के दिन) के बाद ही पूर्ण हो सका। वहीं, काउंसिल मां सीताजी के प्राकट्य-क्षेत्र सीतामढ़ी को शक्ति-क्षेत्र के रूप में विकसित करने के लिए वर्ष 2018 से ही सीतामढ़ी में कार्य करती रही है। काउंसिल के प्रयत्नों को देखते हुए 19 मई 2025 को बिहार सरकार अंतर्गत बिहार राज्य धार्मिक न्यास पर्षद ने सीतामढ़ी में प्रकट-स्थान पुनौरा-धाम से तीन-किलोमीटर दूर 833 वर्ष अति-प्राचीन श्रीराम-जानकी स्थान को विकसित करने हेतु काउंसिल को इस मठ के साथ लगभग 12 एकड़ भूमि भी आवंटित कर दी। 10 जून 2025 को नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में काउंसिल के तत्त्वावधान में प्रेस वार्ता आयोजित कर देश के कई पूज्य संतों ने इसके लिए केंद्र सरकार और बिहार सरकार के प्रति विशेष आभार प्रकट भी किया। काउंसिल सीतामढ़ी में अति प्राचीन इस स्थान पर 51 शक्तिपीठों से मिट्टी एवं ज्योत लाकर एक 'अखण्ड-शक्ति-ज्योत' के साथ गर्भगृह में एक 'चतुर्भुजा महालक्ष्मी' के स्वरूप को भी स्थापित करेगी। सीतामढ़ी में काउंसिल का उद्देश्य केवल एक मंदिर का ही निर्माण करना नहीं है, बल्कि 'विश्व-नारी केंद्र' की स्थापना करना है जो समस्त नारी जगत के लिए गौरव का प्रतीक हो।

काउंसिल, राष्ट्र के सांस्कृतिक-उत्कर्ष के संवर्धन हेतु साहित्य-सृजन पर विशेष कार्य करती रही है। 'सनातन संग भारत', 'श्रीभगवती सीता- महाशक्ति साधना' समेत कई ज्ञानवर्द्धक-पुस्तकों के प्रकाशन के अलावा काउंसिल ने वर्ष 2025 में प्रयागराज में आयोजित ऐतिहासिक महाकुंभ पर अब तक सबसे वृहद व आकर्षक कॉफीटेबल-बुक शीर्षक- 'महाकुंभ का महामंथन' को हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में तैयार किया है। वहीं, देवभाषा संस्कृत को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु संस्कृत भाषा के शिक्षण-प्रशिक्षण संबंधी 60 दिनों का एक कोर्स मोड्यूल बनाकर कई कार्यक्रमों के संचालन के साथ संस्कृत भाषा में पाक्षिक पत्रिका 'रामायण वार्ता' का पिछले ढाई वर्षों से प्रकाशन भी काउंसिल करती रही है। इतना ही नहीं, संस्कृत भाषा में समाचार एवं संस्कृति पर आधारित एक वेबसाइट RamayanVarta.com को क्रियान्वित भी करती रही है। हम संस्कृत भाषा के उत्थान के लिए कार्य करने वाले महानुभावों को हर वर्ष 'संस्कृत भूषण सम्मान' भी प्रदान करते रहे हैं।

SHIVA APARTMENT, F-52/53, GALI NO. 10, OM VIHAR EXTN.
UTTAM NAGAR, DELHI. 110059

Org. Web: www.ramayanresearchcouncil.com | **Email:** ramayanresearchcouncil@gmail.com
Book Web: mahakumbhkamahamanthan.com | **Kumbh Web:** kumbhinfo.com

Mobile: +91 9650349300 | +91 9891169934

/RamayanResearchCouncil
/ramayanresearchcouncil
/RamayanResearch
/RamayanManch

Correspondence Address

32-B, J.P Complex, Patparganj, Mayur Vihar Phase - 1, Delhi - 110091